प्रेमाध्यात्म की विश्वजनीन भक्तिधारा : सूफी संप्रदाय

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री, पूर्व पीठाध्यक्ष,
आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा.राज. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

भक्ति आन्दोलन ने भारत में अपने आराध्य के प्रति प्रेम, समर्पण, माधुर्य, अनुग्रह को आकांक्षा आदि की सरसता से सराबोर धर्माचरण की जिस रसमयी धारा से जन-जन को सींचने का इतिहास रचा है वह विश्वभर के धर्मों के अभिलेख का एक कीर्तिमान है। पूरे देश में कीर्तन-भजन, प्रेम पगा पूजन, नृत्य-गीत आदि नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में समाज को भक्ति की मधुर धारा से आज भी सींचते देखे जा सकते हैं। वैसे तो धर्म का एक प्रमुख सिद्धान्त यह भी है कि ईश्वर विश्व का नियामक है, न्यायकर्ता है, अच्छे-बुरे कर्मों की जांच कर तदनुसार प्राणियों का न्याय करता है, अच्छे को पुरस्कृत करता है, बुरे को दण्डित करता है। इस सिद्धान्त के आधार पर ही विश्व के धर्मों का अनुशासन चलता भी है। न्याय के इस प्रभाव से ही मानव सत्कर्म करता है, यह भी माना जाता है।

भारत के धर्मों में भी एक अवधारणा यह है कि चित्रगुप्त मानव के अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखता है। मृत्यु के बाद यमराज उसे जाँच कर मनुष्य को स्वर्ग या नरक का वास देते हैं आदि। इस्लाम आदि धर्मों में भी विधान है कि हश्र में खुदा इन्सान के अच्छे-बुरे कामों के अनुसार (उसकी मृत्यु के बाद) उसे पुरस्कृत या दण्डित करेंगे। किन्तु धर्म की इस अवधारणा में जब से प्रेमलक्षणा भक्ति की नई धारा उद्भूत हुई, तब से उसका रंग ही बदल गया। यह अवधारणा है ''उस न्यायकारी ईश्वर से इतना प्रेम करने लगो जैसा माता-पिता से किया जाता है ताकि कोई गलती भी तुमसे हो जाए तो प्रेम के कारण परमपिता तुम्हें दण्ड नहीं दे, क्षमा कर दे।'' यह है प्रेमलक्षणा भक्ति की अवधारणा जिसने धर्म को एक नया रंग दे दिया। भारत में इस भक्ति का इतिहास इतना विशाल, वैविध्यमय और बहुरंगी है कि उस पर अनन्तकाल से चिन्तन होता रहा है , विपुल साहित्य भी सभी भाषाओं में लिखा गया है।

प्रेमलक्षणा भक्ति की यह धारा अन्य धर्मों में भी बही है यह तथ्य भी ध्यातव्य है। अरब-फारस आदि देशों में इस्लाम से सम्बन्धित धार्मिक अवधारणाओं में जिस प्रकार धर्मानुशासन के अनुसार आचरण का विधान है जिसे शरीयत कहा जाता है उसी प्रकार भारत की प्रेमलक्षणा भक्ति की धारा के

समानान्तर आराध्य को प्रेम और समर्पण से, कीर्तन और माधुर्य से प्रसन्न करने की एक आध्यात्मिक धारा भी उतनी ही बलवती सिद्ध हुई है जिसे 'सूफी' मत की धारा या 'तसव्वुफ' कहा जाता है। सदियों से इस धारा का प्रभाव विश्वभर में देखा जा रहा है। सैकड़ों सूफी-सन्तों के अनुयायी विश्वभर में हैं, बड़ी संख्या में भारत में भी हैं। उन सन्तों की आराधना में भक्तिरस से सनी सुमधुर संगीतबद्ध कव्वालियां देशभर के नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में आपको सुनने को आज भी मिलती हैं। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह विश्व में प्रसिद्ध है जो इस भक्तिप्रधान 'सूफी' परम्परा का प्रमुख केन्द्र है। वहाँ प्रेम और अध्यात्म की धारा बहती देखी जाती है।

तसव्वुफ और शरीयत

शरीयत में जिस प्रकार आचार और अनुशासन प्रमुख तत्व हैं उसी प्रकार तसव्वुफ में अध्यात्म और प्रेम प्रमुख हैं। ठीक इसी प्रकार जैसे भारतीय धर्म में एक धारा मर्यादा की है, दूसरी रागानुमा भक्ति की। इस सूफी परम्परा का इतिहास सदियों पुराना है। यह इस्लाम का ही अनुवर्ती संप्रदाय है। इस्लाम के प्रणेता पैगम्बर मुहम्मद साहब के निधन के (६३२ ई.) कुछ समय बाद ही कबीलों का वर्चस्व बढ़ने के फलस्वरूप, उनके आपसी झगड़ों के फलस्वरूप तथा अन्य कारणों से समाज में कई तरह के वर्ग उद्‌भूत हो गए। कुछ वैभवशाली थे, कुछ विपन्न रह गए। कुछ निर्धन, आध्यात्मिक वर्ग के सत्पुरुषों ने भोगविलास के विरुद्ध परमात्मा से प्रेम का मार्ग उचित बतलाया। ऐसे सन्त सूत या ऊन का मोटा कपड़ा पहनते थे जिसे ''सूफ'' (ऊन) कहते थे अत: कालान्तर में उनके प्रेमाध्यात्मपरक संप्रदाय को सूफी कहा जाने लगा। इनकी विचारधारा को तसव्वुफ कहा जाता है।

यह धारा इस्लाम के विकास के कुछ समय बाद ही प्रारंभ हो गई थी अत: इसे भी चौदह सदी पूर्व उद्‌भूत धारा ही माना जाता है। इस धारा की प्रमुख अवधारणा थी, धर्म के आचरण की जटिलताओं से, आचार के पचड़ों से बचकर ईश्वर के प्रति सीधे-सादे तरीके से समर्पण और प्रेम के सिद्धान्त को अपनाना। चूंकि ईश्वर ही मानव के कर्मों के अच्छे-बुरे का निर्णय करेगा, उसके दलाल नहीं, अत: धर्मध्वनियों के आचारों पर अधिक फंसने की आवश्यकता ये नहीं समझते थे। इनकी दृष्टि केवल अपने वर्ग तक संकुचित नहीं थी, ईश्वर तो मानवमात्र का रक्षक है ''रब्बुल आलमीन'' है अत: विश्व मानव की एकता, मानवता के प्रेम की भावना इनकी धारा में प्रमुख है। ये नहीं मानते कि कुरान में उल्लिखित २४ पैगम्बरों तक ही धर्म सीमित है, बल्कि एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर, जिनकी चर्चा मिलती है, सभी पवित्र हैं, मान्य हैं। वैराग्य, अध्यात्म, परमपिता के प्रति प्रेम इत्यादि ही धर्म के सही लक्षण हैं ऐसी उनकी मान्यता थी।

सुदीर्घ परम्परा

ऐसे अनेक कारणों से सूफी धारा का झुकाव रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद की ओर तथा भौतिक जीवन से ऊपर उठकर प्रेम लक्षणा भक्ति को अपनाने की ओर अधिक होता चला गया। इस परम्परा के संत ख्वाजा हसन बसरी (६४२-७२८ ई.) इब्राहीम अल अजाली (मृत्यु ८७५ ई.), इब्न अल हरीस (मृत्यु ८४१ ई.) आदि का फकीराना, प्रेमपगा जीवन सूफी धारा का प्रेरक रहा। अल खर्राज ने 'उल सिदक' पुस्तक इसी विचार पर लिखी, अल सुलामी ने (मृत्यु १०२१ ई.) 'तबकात-उल-सूफिया' पुस्तक लिखी। इनके बाद अनेक संतों ने इस परम्परा का संवर्धन किया। परमात्मा के प्रेम को अभिव्यक्त करने वाला भक्तिपरक साहित्य ऐसे संतों ने प्रवर्तित किया। अनेक भाषाओं में भजन, कव्वाली आदि की सुदीर्घ परम्परा चली जो निरन्तर चल रही है।

सिद्धान्त और शैली

प्रेमलक्षणा भक्ति के आचार जिस प्रकार बन्धनमुक्त और सरल होते हैं उसी प्रकार की जीवनचर्या सूफी सन्तों की मान्य चर्या थी। उनकी यह मान्यता थी कि धर्माचरण बन्धनों में बंधने से ही पूरा नहीं होता, केवल पांच बार नमाज पढ़ने की रस्म निभाना क्या धर्म की संपूर्णता कही जाएगी। हमें तो हर क्षण ईश्वर का ध्यान करना है, पांच बार ही क्यों? कहीं भी बैठकर हम उसके प्रेम में सराबोर हो सकते हैं। ऐसे सन्त किसी भी चबूतरे पर बैठ जाते थे, भक्तों के साथ भजन करने लगते थे। चबूतरे को 'सूफ' भी कहा जाता है। कुछ चिंतक 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति सूफ-चबूतरे को लेकर भी करते हैं। तसव्वुफ की यह चिन्तन धारा अरब देशों के बाहर बड़ी तेजी से फैलती गई। सूफी सन्त विभिन्न देशों में जाकर प्रवचन, कीर्तन आदि करते थे। इनके लिखे भजन, कथा-वार्ताएं आदि विभिन्न भाषाओं के साहित्य में प्रसारित होते गए जिनका प्रभाव विश्व के सभी देशों पर, सभी धर्मों पर हुआ।

इमाम अल गजाली

सूफी संप्रदाय के सर्वाधिक यशस्वी प्रचारक इमाम अल गजाली (१११९ ई.) माने जाते हैं। इन्हें सूफी परम्परा के वेद व्यास कहा जा सकता है। इनके अनेक ग्रन्थ सूफी सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को स्थापित करने वाली आधारशिला सिद्ध हुए। 'अल मुनकिज मीन अल जलाल', 'ऐहिया अल उलूम', 'किमिया अल सआदत', 'मिशकात उल अनवार' आदि ग्रंथों ने सूफी सम्प्रदाय की मान्यताओं को स्थापित किया। ईश्वर निराकार है (बेचून है, बेचिनगूना है), उससे प्रेम करने की शिक्षा हमें हमारे गुरु (मुर्शिद) देंगे, हम उनके मुरीद होकर (शिष्य बनकर) सलूक सीखेंगे जिससे मनाजिल मिलेंगी, बन्धनों से मुक्ति और वैराग्य (जुहद) प्राप्त होगा, ईश्वर पर अखंड विश्वास (तवक्कुल) रहेगा, उनकी मुशाहदात (ध्यान) की जाती रहेगी। इन सिद्धान्तों में रहस्यवाद, आध्यात्मिक अनुभूति और प्रेममार्ग के तत्त्व स्पष्ट

देखे जा सकते हैं (मआरिफत और तरीकत)।

विश्वजनीन साहित्य

इन परम्पराओं ने जनमानस को इतना प्रभावित किया कि विश्व के अनेक देशों में यह प्रेमाधारित आध्यात्मिक रहस्यवाद जनता के आकर्षण का केन्द्र बन गया। इसके अनुरूप गीतियां, भजन, कव्वालियां, बोधकथाएं, संस्मरण आदि विभिन्न भाषाओं में लिखे जाने लगे। ईश्वरीय अनुभूति (मुशाहदात अर रबूबिया) के उपदेशक सन्त अनेक देशों में हुए। ऐसे कवि और साहित्यकार भी लोकप्रिय हो गए। अनेक धर्मों की उपासना परम्पराओं, भजन-कीर्तन की मान्यताओं पर भी इसका प्रभाव देखा जाने लगा। जलालुद्दीन रूमी जैसे साहित्यकारों की कथाएं इसी मान्यता से प्रभावित थीं जिनकी ख्याति विश्वभर में फैल गई थी। विश्व की अनेक भाषाओं में रूमी की रचनाओं के अनुवाद हुए हैं। संस्कृत में भी डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने इनका अनुवाद किया है जो 'रूमी रहस्यम्' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

भारत में- तेरहवीं सदी के बाद से सूफी सन्तों के अनुयायियों की संख्या विश्व के देशों में बढ़ती रही। जहां-जहां इन सन्तों ने प्रवास किया, इनके उपदेशों ने अनेक शिष्यों को प्रभावित किया, उनके स्मारक आज तक विभिन्न देशों में देखे जा सकते हैं। दिल्ली में सूफी सन्त हजरत निजामुद्दीन औलिया सुप्रसिद्ध हो गये थे जिनके शिष्य अमीर खुसरो इतिहास में सुविदित हैं। रहस्यवादी काव्य परम्परा और प्रेमपरक भक्ति कविता का इतिहास अमीर खुसरो के बिना पूरा हो ही नहीं सकता। उनके अनेक वचन आज तक लोककंठ में समाए हुए हैं। 'छाप तिलक सब छीन ली रे मोसे नैना मिला के' जैसे वचन स्पष्ट करते हैं कि प्रेम लक्षणा भक्ति में बाहरी तिलकछापों को महत्त्व नहीं माना जाता। अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया के अंतिम दर्शन करने के बाद उनके मुख से निकला दोहा भी बहुत उद्धृत किया जाता है जो सूफी साहित्य की प्रतीकात्मकता का प्रमाण है-

गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।

भारतीय काव्य साहित्य को सूफी परम्परा ने किस प्रकार प्रभावित किया इसके अनेक उदाहरण भारतीय भाषाओं में देखे जा सकते हैं। अठारहवीं सदी के सिंधी भाषा के विख्यात कवि शाह अब्दुल लतीफ सिन्ध प्रान्त के प्रमुख साहित्यकार माने जाते हैं। इनकी कविता सूफी साहित्य के महत्त्वपूर्ण साहित्य का मूल्यवान भंडार है। उसका संस्कृत में भी अनुवाद हुआ है। जोधपुर के कविवर स्व. श्रीराम दवे ने 'ब्रह्मरसायनम्' शीर्षक से उसका संस्कृतानुवाद प्रकाशित करवाया है। राजस्थान में काजी महमूद (१५वीं सदी) आदि अनेक सूफी सन्त हुए हैं। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती तो विश्वप्रसिद्ध सूफी

सन्त हैं जिनकी मजार पर प्रतिवर्ष जो उर्स मनाया जाता है उसमें विश्वभर के श्रद्धालु चादर चढ़ाने आते हैं। ये विभिन्न धर्मों के अनुयायी होते हैं। सूफी सम्प्रदाय की यह विशेषता भी है कि वह श्रद्धालुओं में धर्मजनित भेदभाव नहीं करता।

प्रेरणा भारत की

कश्मीर की कवयित्री लल्लथद और राजस्थान की अमर भक्त कवयित्री मीरां बाई पर भी प्रेमलक्षणा भक्ति का जो प्रभाव था उस पर सूफी परम्परा की परछाईं अनेक समीक्षकों ने खोजी है। लल्लथद को तो सूफी परम्परा की ही भक्त कवयित्री माना जाता है। पद्मावत के प्रणेता मलिक मुहम्मद जायसी आदि अनेक हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रसिद्ध कवि सूफी परम्परा से प्रभावित रहे यह तथ्य भी सुविदित है। इसी प्रकार विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रेमलक्षणा भक्ति और आध्यात्मिक साधना के समर्थक अनेक सन्तों, कवियों और विमर्शकों के विचार सूफी मान्यताओं के अनुरूप पाए जाते हैं जो सदियों पुराने हैं। अनेक भक्ति संप्रदाय तो सूफी परम्परा के प्रारंभ से पूर्व भी भारत में प्रेमलक्षणा भक्ति और आध्यात्मिक साधना का मार्ग बताते रहे हैं। दक्षिण भारत में भी ऐसे संप्रदाय पनपे हैं। इसीलिए अनेक विद्वानों का यह मत है कि अरब आदि देशों में भारत से ही मधुर भक्ति और रहस्यात्मक साधना के सूत्र पहुंचे थे और उन्हीं के प्रभाव से कुरान की शरीयत और मर्यादा वाली परम्परा से अलग सूफी परम्परा प्रारंभ हुई अत: यह विचारधारा पूर्णत: भारत प्रेरित है।

बहादुर शाह जफर की वाणी

भारत के अन्तिम बादशाह बहादुर शाह जफर स्वयं दार्शनिक, भक्त और कवि थे। उनकी कविता पर सूफी संप्रदाय का पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता है। उसके अनुशीलन से भी यह स्पष्ट हो जाएगा कि भारतीय दर्शन की मान्यताओं के कितने निकट ऐसी मान्यताएं हैं जो सूफियों में भी देखी जाती हैं। बहादुर शाह जफर रहस्यवादी भक्त की तरह कहते हैं–

दिया अपनी खुदी को जो हमने उठा, वो जो पर्दा सा बीच में था, न रहा।
रहा पर्दे में इक वही पर्दानशीं, कोई दूसरा उसके सिवा न रहा।।

ज्योंही हम 'अहम्' के पर्दे को हटा देते हैं, द्वैत समापन हो जाता है। ''एकोऽहं द्वितीयो नऽस्ति'' वाला सिद्धान्त हमें आराध्य से एकात्म कर देता है। इसी प्रकार के आध्यात्मिक और रहस्यात्मक सूत्र सूफी संप्रदाय में पाए जाते हैं। इन सबके अध्ययन से भारतीय अध्यात्मदर्शन और सूफी मान्यताओं की तुलना के फलस्वरूप अनेक नई दिशाएँ तलाशी जा सकती हैं।